



क्या मोहन भागवत, मोदी से सीधी लड़ाई चाहेंगे, नये पार्टी अध्यक्ष के प्रश्न पर?

जब तक मोदी प्र.मंत्री हैं, मोहन भागवत अपने उम्मीदवार संजय जोशी को शायद भाजपा के अध्यक्ष के रूप में नहीं देख पायेंगे

-रेणु मित्तल-

-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्लूरो-

नई दिल्ली, 4 अक्टूबर। आर.एस.एस. और भाजपा नेतृत्व के बीच चल रहे तापमापी संबंध अब भाजपा अध्यक्ष पद को लेकर तीव्र रस्साकरण का रूप ले चुके हैं।

पार्टी अध्यक्ष पद से जे.पी.नड्डा के रिटायरमेंट के बाद, भाजपा और आर.एस.एस. अगली पार्टी अध्यक्ष के चयन के मामले में परस्पर पूर्ण रूप से सहमत नहीं हैं। इसलिये नये अध्यक्ष के नियन्त्रण में एस और एस.एस.पर चाही चुकाए जाएंगे।

अगर भागवत, संजय जोशी को पार्टी अध्यक्ष बनवाने में सफल हो गये तो, भागवत जानते हैं कि इससे पार्टी में विभाजन भी हो सकता है।

अतः कई और नाम चलाये जा रहे हैं, जैसे नितिन गडकीरी, वर्षुंदरा राजे। पर, इन नामों में से किसी भी नाम पर आम सहमति नहीं बन रही है। अतः रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह का नाम चलाया गया है। पर, वे एक कमज़ोर व्यक्ति माने जाते हैं, अतः दोनों खेमों का मानना है कि राजनाथ सिंह किसी भी खेमे का राजनीतिक एंडों पूरा नहीं कर पायेंगे।

अगर भाजपा चार राज्यों में विधानसभा चुनाव हार जाती है तो कमज़ोर पी.एम. अपनी ज़िद पर नहीं अङ्ग लायेंगे, अतः इन हालात में संजय जोशी भाजपा अध्यक्ष बन सकते हैं।

साथ ही मोदी-शाह द्वय आर.एस.एस. के प्रिय, यू.पी. के मु.मंत्री पद से हालाने की मुहिम और सक्रिय कर सकते हैं।

अतः भाजपा के नये अध्यक्ष की गुरुत्वी सुलझती नज़र नहीं आ रही है और तब तक नहुँ एक्सटेंशन पर चलते रहेंगे।

में लगे रहते हैं। यह तो स्पष्ट है कि उन्हें आर.एस.एस. के शीर्ष नेतृत्व का पूर्ण समर्थन प्राप्त है, तो उन्हें अवसराजदारी के बारे में विभाजन कोई अपवाद नहीं है। यह वही

कहानी है कि जब भी केन्द्रीय नेतृत्व कमज़ोर होता है तो अवसराजदारी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

क्षत्रप

-जाल खंबाता-

-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्लूरो-

नई दिल्ली, 4 अक्टूबर। अक्टूबर के बारे में विभाजन भी हो सकता है।

■ जब केन्द्रीय सत्ता कमज़ोर होती है तो क्षत्रप मनमानी करते हैं।

कहानी है कि जब भी केन्द्रीय नेतृत्व कमज़ोर हो जाता है तो अवसराजदारी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मां-बेटी ने घर में बंद होकर आदमखोर पैंथर से जान बचाई

सरिस्का, रणथम्भौर और केवलादेव के अधिकारी भी सर्च टीम में शामिल हुए

उदयपुर, 4 अक्टूबर (कासे)। उदयपुर जिले के गांगुंदा-बड़ागांव उपखंड के तीन पंचायत के गांवों में आदमखोर पैंथर का आंकंक इतना बढ़ गया है कि ग्रामीण हर पल 9 सिंतंबर को किया था उसे अब तक 15 दिन बीते चुक है। ग्रामीण हर पल 15 दिन में बाजार विभाग, पैथर और प्रशासन आदमखोर पैंथर को पकड़ने का शुरू हुआ है।

उदयपुर दिल्ली ब्लूरो-

नई दिल्ली, 4 अक्टूबर। पूर्व

भाजपा छोड़ कांग्रेस में क्यों लौटे तंवर

-जाल खंबाता-

-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्लूरो-

नई दिल्ली, 4 अक्टूबर। पूर्व

■ कांग्रेस छोड़कर

पहले आप और फिर

भाजपा में जाने वाले

दलित नेता अशोक

तंवर ने कांग्रेस में

वापसी पर कहा कि

भाजपा की बाबा

साहेब अम्बेडकर

और संविधान में

आस्था नहीं हैं,

इसलिए वे कांग्रेस में

लौट आए हैं।

कांग्रेस सांसद डॉ. अशोक तंवर ने

शुक्रवार को कहा कि उन्होंने भाजपा

संसदीय छोड़ी, व्यक्तिके उपरांत नेतृत्व के लिये कई

प्रश्नों को उत्तर दिया है।

एक दिन भाजपा की बाबा

साहेब अम्बेडकर और संविधान में

आस्था नहीं हैं।

कांग्रेस संसद डॉ. अशोक तंवर

को लौट कर रखा है।

जिले के गोंगुंदा और झाड़ोल एरिया

में जीते करीब 15 दिन से पैंथर लगातार

हमले कर रहा है। यहां दोनों गांवों में दहशत है और ग्रामीणों में वन

पैंथर को ढैंकूलाइज करने की कोशिश लगा है।

मुख्य वन्यजीव प्रतिपालक पवन

उदयपुर में बताया कि पैंथर को शूट

करने के लिए उसे एक गांव में रखा जाता है। यहां दोनों गांवों में दहशत है और ग्रामीणों में वन

पैंथर को ढैंकूलाइज करने की कोशिश लगा है।

ग्रामीणों के आंदों पर पैंथर वार बाहर

के लिए उसे एक गांव में रखा जाता है। यहां दोनों गांवों में दहशत है और ग्रामीणों में वन

पैंथर को ढैंकूलाइज करने की कोशिश लगा है।

ग्रामीणों के आंदों पर पैंथर वार बाहर

के लिए उसे एक गांव में रखा जाता है। यहां दोनों गांवों में दहशत है और ग्रामीणों में वन

पैंथर को ढैंकूलाइज करने की कोशिश लगा है।

ग्रामीणों के आंदों पर पैंथर वार बाहर

के लिए उसे एक गांव में रखा जाता है। यहां दोनों गांवों में दहशत है और ग्रामीणों में वन

पैंथर को ढैंकूलाइज करने की कोशिश लगा है।

ग्रामीणों के आंदों पर पैंथर वार बाहर

के लिए उसे एक गांव में रखा जाता है। यहां दोनों गांवों में दहशत है और ग्रामीणों में वन

पैंथर को ढैंकूलाइज करने की कोशिश लगा है।

ग्रामीणों के आंदों पर पैंथर वार बाहर

के लिए उसे एक गांव में रखा जाता है। यहां दोनों गांवों में दहशत है और ग्रामीणों में वन

पैंथर को ढैंकूलाइज करने की कोशिश लगा है।

ग्रामीणों के आंदों पर पैंथर वार बाहर

के लिए उसे एक गांव में रखा जाता है। यहां दोनों गांवों में दहशत है और ग्रामीणों में वन

पैंथर को ढैंकूलाइज करने की कोशिश लगा है।

ग्रामीणों के आंदों पर पैंथर वार बाहर

के लिए उसे एक गांव में रखा जाता है। यहां दोनों गांवों में दहशत है और ग्रामीणों में वन

पैंथर को ढैंकूलाइज करने की कोशिश लगा है।

ग्रामीणों के आंदों पर पैंथर वार बाहर

के लिए उसे एक गांव में रखा जाता है। यहां दोनों गांवों में दहशत है और ग्रामीणों में वन

पैंथर को ढैंकूलाइज करने की कोशिश लगा है।

ग्रामीणों के आंदों पर पैंथर वार बाहर

विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी हँचा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। -सुफियान सौरी

घटिया और नकली दवाओं से बिगड़ रही है सेहत

के

द्रीय औषधि नियमक की रोजमर्याद में काम आने वाली दवाओं के जैंच में फेल होने पर लोग सकते हैं। केंद्रीय औषधि नियमक की माह असरत की हाल ही जारी रखने की रिपोर्ट में बताया है तुखारा, डायबिटीज, हाई ब्लड प्रेशर, पेट में संक्रमण आदि स्वास्थ्य समस्याओं के लिए जिन दवाओं का आप इत्यमाल करते हैं, असल में उनकी कवालीटी खराब है। इतना ही नहीं, बहुत सी दवाएं तो नकली हैं, जिन्हें बड़ी कपनियों के ब्रांड के नाम से बेचा जा रहा है।

रिपोर्ट के मुताबिक ऐसीसिटायोल, पैन डी और कैलियम सल्फेट मेंट सहित 53 दवाएं कवालीटी चैक में फेल हो गई हैं। कवालीटी चैक में फेल होने वाली दवाओं में विटामिन सी और डी३, टैबलेट, शैलोन, विटामिन बी कॉम्प्लेक्स, सी सॉफ्टजेल, एंटी-एसिड पैन-डी, ऐसीसिटायोल टैबलेट (अइपी 500 मिलीग्राम), एंटी डायबिटीज दवा लिमिपिराइड और हार्फा बीपी की दवा टेलिमर्सन शामिल हैं। इन दवाओं के लिए उत्योग को लेकर सुरक्षा संबंधी चिंताएं पैदा हो गई हैं। आप दवाई खरीदने के लिए बाजार में जा रहे हैं तो पूरी सावधानी और सरकित होना हूँ दवाइयों की जाँच करके लैं और अपनी दवाइयों को डाक्टर को एक बार जरूर दिखा दें, यांकिंग इन दियों बाजार में घटिया दवाइयों को असली बता कर खुलेआप बेचा जा रहा है। देश में हर बीमारी के लिए नकली दवाएं उपलब्ध हैं। इन नकली दवाइयों की पहचान करना आप और हमारे लिए बेहद मुश्किल और लगभग अंभूत है। हमारे देश में अंग्रेजी दवाइयों ने घर घर में अपना साप्राय स्थापित कर लिया है। जिस देखो अंग्रेजी दवाइयों के पीछे भागता मिलता है। साप्राय बीमारियों से लेकर असाध्य बीमारियों की दवा आज भीर में मिल जाएगी। इनमें चिकित्सकों द्वारा लिखी दवाइयों के अलावा वे दवाइयों भी शामिल हैं जो मेडिसिन स्टोर्स से बीमारी बताकर खरीदी गई है और दवाइयों को असली बता कर खुलेआप बेचा जा रहा है। आप देश भवियता और नकली दवाइयों का बाजार में खबरें मीडिया में सुखिया में पढ़ने को मिल रही है। इन दवाइयों के सेवन से साधारण खांसी बुखार और जुखाम को ठीक होने में एक प्रभावात्मक या महसूस लग जाता है। इसके बावजूद ऐसी दवाइयों खरीदने में हमें कोई उदाहरण नहीं देखा जाता है।

सरकार की लाख काशियों के बावजूद देश में घटिया और नकली दवाओं पर पूरी तरह लगाम नहीं लगाई जा सकी है, जिसके कारण देश के लाखों लोगों की सेहत सुधरने के बजाय विडर रही है। भारत में नकली घटिया और अवैध दवाओं का धंधा और तेजी से फैला है, जिसकी वजह से घटियों की जान जाखिम है। विशेषज्ञों के मुताबिक जो दवाएं खोखाधारी से निर्भित या पैक की गई हैं, उन्हें नकली और घटिया दवाएं कहा जाता है क्योंकि उनमें या तो साक्रिय अवयवों की कमी होती है या गतिशील खुलासा नहीं है। नकली दवाइयों का बाजार में खबरें और सरकारी एजेंसियों की खबरें आये दिन मीडिया की सुखिया बनती है।

अनेक बार लाखों कर्डों रुपयों की घटिया दवाएं खबर होने के बाद सरकारी घटिया दवाओं के सेरेआम इत्यमाल से अद्यतनी नहीं है। हाल ही में दिल्ली के उपराज्यपाल वी.के.सक्सेना ने राशीय राजधानी के सरकारी अस्पतालों में सप्लाई की जा रही खराब गुणवत्ता की दवाओं की जांच केंद्रीय जांच व्यारोग से कराने की सिफारिश की है।

प्रधाराज्याल ने कहा कि यह चिंता का विषय है कि निजी और सरकारी लैंड में टेस्ट की गई ये दवाएं अच्छी गुणवत्ता की नहीं निकलती। उद्दीपन कहा कि ये दवाएं दिल्ली के सरकारी अस्पतालों में लाखों मरीजों को दी जा रही हैं। इससे पूर्व विवर स्वास्थ्य संगठन ने भारत में कैसर और लीवर की नकली की बिक्री को लेकर अलर्ट जारी किया था। इग कंट्रोलर जनरल ऑफ ईंडिया ने सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के इग कंट्रोलर को दो दवाओं लीवर की दवा डिफिटेलियों और कैरीब की इक्सेनन के नकली वर्जन की बिक्री और डिस्ट्रिब्यूशन पर कड़ी निगरानी रखने का निर्देश दिया।

भारत दवाओं का सबसे ज्यादा प्रोडक्शन करने वाला देश है। मगर देशवासियों के अच्छी गुणवत्ता की दवाएं नहीं मिल पा रही हैं। इंडिया ब्रांड इक्विटी फाउंडेशन के मुताबिक, भारत में फार्म इंडस्ट्री बींदू सालों में तेजी से बढ़ रही है। इसमें साल 2020 से 2025 के बीच 37 प्रतिशत कंपांड एनुअल ग्रोथ की अनुमान जाताया गया है। साल 2024 में 10-11 प्रतिशत बढ़ोत्तरी का अनुमान है। एक रिपोर्ट के मुताबिक सबसे अधिक मात्रा में दवाइयों बनाने में शारत विषय का तीसरा सबसे बड़ा देश है। देश में सबसे तेज गति से बढ़ रहे हैं कोई कारोबार के 55 बिलियन डॉलर तक पहुँचने के साथ ही नकली और घटिया की दवाओं का अवैध कारोबार भी बढ़ रहा है जिससे लोगों की जान पर खतरा बढ़ता जा रहा है। एसोसिएट ने अपनी एक रिपोर्ट में देश में बनने वाली कुल दवाओं के 25 प्रतिशत नकली और खराब गुणवत्ता वाली दवाओं बनने और अन्य काशों और केंद्र शासित प्रदेशों के इग कंट्रोलर को दो दवाओं लीवर की दवा डिफिटेलियों और कैरीब की इक्सेनन के नकली वर्जन की बिक्री और डिस्ट्रिब्यूशन पर कड़ी निगरानी रखने का निर्देश दिया।

भारत दवाओं का सबसे ज्यादा प्रोडक्शन करने वाला देश है। मगर देशवासियों के अच्छी गुणवत्ता की दवाएं नहीं मिल पा रही हैं। इंडिया ब्रांड इक्विटी फाउंडेशन के मुताबिक, भारत में फार्म इंडस्ट्री बींदू सालों में तेजी से बढ़ रही है। इसमें साल 2020 से 2025 के बीच 37 प्रतिशत कंपांड एनुअल ग्रोथ की अनुमान जाताया गया है। साल 2024 में 10-11 प्रतिशत बढ़ोत्तरी का अनुमान है। एक रिपोर्ट के मुताबिक सबसे अधिक मात्रा में दवाइयों बनाने में शारत विषय का तीसरा सबसे बड़ा देश है। देश में सबसे तेज गति से बढ़ रहे हैं कोई कारोबार के 55 बिलियन डॉलर तक पहुँचने के साथ ही नकली और घटिया की दवाओं का अवैध कारोबार भी बढ़ रहा है जिससे लोगों की जान पर खतरा बढ़ता जा रहा है। एसोसिएट ने अपनी एक रिपोर्ट में देश में बनने वाली कुल दवाओं के 25 प्रतिशत नकली और खराब गुणवत्ता वाली दवाओं बनने और अन्य काशों और केंद्र शासित प्रदेशों के इग कंट्रोलर को दो दवाओं लीवर की दवा डिफिटेलियों और कैरीब की इक्सेनन के नकली वर्जन की बिक्री और डिस्ट्रिब्यूशन पर कड़ी निगरानी रखने का निर्देश दिया।

भारत दवाओं का सबसे ज्यादा प्रोडक्शन करने वाला देश है। मगर देशवासियों के अच्छी गुणवत्ता की दवाएं नहीं मिल पा रही हैं। इंडिया ब्रांड इक्विटी फाउंडेशन के मुताबिक, भारत में फार्म इंडस्ट्री बींदू सालों में तेजी से बढ़ रही है। इसमें साल 2020 से 2025 के बीच 37 प्रतिशत कंपांड एनुअल ग्रोथ की अनुमान जाताया गया है। साल 2024 में 10-11 प्रतिशत बढ़ोत्तरी का अनुमान है। एक रिपोर्ट के मुताबिक सबसे अधिक मात्रा में दवाइयों बनाने में शारत विषय का तीसरा सबसे बड़ा देश है। देश में सबसे तेज गति से बढ़ रहे हैं कोई कारोबार के 55 बिलियन डॉलर तक पहुँचने के साथ ही नकली और घटिया की दवाओं का अवैध कारोबार भी बढ़ रहा है जिससे लोगों की जान पर खतरा बढ़ता जा रहा है। एसोसिएट ने अपनी एक रिपोर्ट में देश में बनने वाली कुल दवाओं के 25 प्रतिशत नकली और खराब गुणवत्ता वाली दवाओं बनने और अन्य काशों और केंद्र शासित प्रदेशों के इग कंट्रोलर को दो दवाओं लीवर की दवा डिफिटेलियों और कैरीब की इक्सेनन के नकली वर्जन की बिक्री और डिस्ट्रिब्यूशन पर कड़ी निगरानी रखने का निर्देश दिया।

भारत दवाओं का सबसे ज्यादा प्रोडक्शन करने वाला देश है। मगर देशवासियों के अच्छी गुणवत्ता की दवाएं नहीं मिल पा रही हैं। इंडिया ब्रांड इक्विटी फाउंडेशन के मुताबिक, भारत में फार्म इंडस्ट्री बींदू सालों में तेजी से बढ़ रही है। इसमें साल 2020 से 2025 के बीच 37 प्रतिशत कंपांड एनुअल ग्रोथ की अनुमान जाताया गया है। साल 2024 में 10-11 प्रतिशत बढ़ोत्तरी का अनुमान है। एक रिपोर्ट के मुताबिक सबसे अधिक मात्रा में दवाइयों बनाने में शारत विषय का तीसरा सबसे बड़ा देश है। देश में सबसे तेज गति से बढ़ रहे हैं कोई कारोबार के 55 बिलियन डॉलर तक पहुँचने के साथ ही नकली और घटिया की दवाओं का अवैध कारोबार भी बढ़ रहा है जिससे लोगों की जान पर खतरा बढ़ता जा रहा है। एसोसिएट ने अपनी एक रिपोर्ट में देश में बनने वाली कुल दवाओं के 25 प्रतिशत नकली और खराब गुणवत्ता वाली दवाओं बनने और अन्य काशों और केंद्र शासित प्रदेशों के इग कंट्रोलर को दो दवाओं लीवर की दवा डिफिटेलियों और कैरीब की इक्सेनन के नकली वर्जन की बिक्री और डिस्ट्रिब्यूशन पर कड़ी निगरानी रखने का निर्देश दिया।

भारत दवाओं का सबसे ज्यादा प्रोडक्शन करने वाला देश है। मगर देशवासियों के अच्छी गुणवत्ता की दवाएं नहीं मिल पा रही हैं। इंडिया ब्रांड इक्विटी फाउंडेशन के मुताबिक, भारत में फार्म इंडस्ट्री बींदू सालों में तेजी से बढ़ रही है। इसमें साल 2020 से 2025 के बीच 37 प्रतिशत कंपांड एनुअल ग्रोथ की अनुमान जाताया गया है। साल 2024 में 10-11 प्रतिशत बढ़ोत्तरी का अनुमान है। एक रिपोर्ट के मुताबिक सबसे अधिक मात्रा में दवाइयों बनाने में शारत विषय का तीसरा सबसे बड़ा देश है। देश में सबसे तेज गति से बढ़ रहे हैं कोई कारोबार के 55 बिलियन डॉलर तक पहुँचने के साथ ही नकली और घटिया की दव

